RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मंगलेश डबराल के साहित्य में समाज

हरिओम पुत्र श्री बालूराम

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
शिक्षा, साहित्यकार, परंपरागत भारतीय विद्या, स्त्री की संघर्ष भरी कहानी।

ABSTRACT

साहित्यकार समस्त समाज को सम्मुख रखकर लोककल्याणार्थ लिखता है, समाज में रहता है, समाज में रहकर वह जो अनुभव करता है, उसी को शब्दबद्ध करके समाज के सम्मुख रखता है। उसकी रचना में चारों ओर के वातावरण का प्रत्यंकन जाने–अनजाने में हो जाता है। उसकी रचना के पीछे उसका व्यक्तित्व भी रहता है, साथ में उसके देशकाल का संबंध भी रहता है। साहित्य का धर्म परिवेश के यथार्थ चित्रण में है। साहित्य समाज व्यवस्था के विविध पक्षों, पारिवारिक संबंधों, वर्ग–संघर्ष और संभवतः पृथक्करण की प्रवृतियों व आबादी की संघटना का चित्रण करता है। सामाजिक विषमताओं तथा असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाना एक साहित्यकार का दायित्व है। समाज में फैले अन्याय, अधर्म, गुलामी, जर्जरता आदि की नींव हिलाने का काम वास्तव में एक साहित्यकार का है, तभी सार्थक रचना युग की सृष्टि बन जाएगी। इस प्रकार हम उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निःसंकोच कह सकते हैं कि रचना प्रक्रिया से समाज और व्यक्ति का अभिन्न संबंध है अर्थात् साहित्य समाज का दर्पण है।

शोध–प्रविधि : इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्त्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्गित अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

मंगलेश डबराल की स्त्री–जाति के प्रति गहरी आस्था है। वे उनके भीतर छिपे हुए दुःखों को बहुत करूणा की आवाज से पुकारते हैं। 'लड़की और अंधा आदमी', 'तारे के प्रकाश की तरह', 'तुम्हारे भीतर' और स्त्रियाँ' आदि ऐसी ही कविताएं हैं जिनमें भारतीय स्त्री की संघर्ष भरी कहानी तथा उसकी जीवन शक्ति को पकड़ने का सार्थक प्रयास किया गया है। मंगलेश डबराल 'तारे के प्रकाश की तरह' नामक कविता में स्त्री देह को लेकर घर की परिकल्पना ऐसे करते हैं–

"स्त्री का देह उसका घर है
वह बिखरी हुई चीजों को सहेजती हैं
तस्वीरों और दीवारों की धूल साफ करती है
कपड़े तहाकर रख देती है
वह अपने भीतर थामे हुए रहती है टूटते पहाड़ों
बिफरती नदियों और ढहते सौर मंडलों को
वह कुछ कहती है या सर झुकाये हँसती है
या उसके आँसु कुछ देर फर्श पर चमकते हैं।"

भविष्य में उसकी स्थितियों में सुधार होगा इस बात के लिए नारी भी आश्वस्त नहीं है। राजेन्द्र यादव भी स्त्रियों के विषय में संवेदना प्रकट करते हुए कहते हैं– "स्त्रियाँ हमारे भविष्य की उभरती हुई शक्तियाँ हैं।" लेकिन आज उन उभरती हुई शक्तियों का ही गला घोंटा जा रहा है।

नारी उत्पीड़न और उसकी यातनामय जीवन स्थितियों का यथार्थ चित्रण करने में मंगलेश माहिर हैं। भारतीय नारी की एक खास विशेषता है कि वह अपने पति का अनुसरण करना अपना सर्वस्व समझती हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक एक स्त्री पुरूष के साथ जुड़ी हुई है। वह आँख बंद किए हुए सही या गलत की पहचान किए बिना ही उसके पीछे–पीछे चलती है। पता नहीं स्त्री के द्वारा ऐसा आचरण क्यों? उसकी इसी निश्छलता के कारण वह सर्वाधिक शोषित है। जैसे–

"सारा दिन काम करने के बाद
एक स्त्री याद करती है
अगले दिन के काम
एक आदमी के पीछे
चुपचाप एक स्त्री चलती है
उसके पैरों के निशानों पर
अपने पैर रखती हुई
रास्ते भर नहीं उठाती निगाह।"

इस विषय पर मंगलेश ने गहरी चिंता प्रकट की है। पेड़, वायु, पानी ये हमारे जीवन के मूल तत्व हैं। इन्हीं तत्वों की भांति वे स्त्रियों को भी महसूस करते हैं। खुद मंगलेश डबराल कहते हैं कि "अगर मुझमें कुछ गुण हैं तो उससे ज्यादा कुछ मुझे स्त्रियों से ही मिले और मैं खुद को भी भीतर से आधा स्त्री महसूस करता हूँ और कभी–कभी सोचता हूँ कि अगर मैं वाकई स्त्री होता तो इस संसार को प्रेम की कोमलता और जगमगाहट से भर देता।"

'आवाज भी एक जगह है' संग्रह में स्त्रियाँ और उनकी क्रियाविधियों पर कुछ कविताएँ हैं। "फेल्लानी की फिल्मों को देखने के बाद मंगलेश ने स्त्रियों का जो चित्र खींचा है उसे देखकर ऐसा लगता है कि कुछ पुरूषों के लिए स्त्रियाँ किसी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तरह मखौल का विषय बनी हुई है जबकि स्त्रियाँ अपनी स्वाभाविकता, सहजता के साथ कोई मर्म की बात कहना चाहती है।" मंगलेश अपनी कविताओं में स्त्री मन की स्वाभाविकताओं को उजागर करते हैं। मंगलेश स्त्री मन के मर्म को जो भले ही धीमी गति में प्रकट होता है, उसे सुनते हैं, उसके होने के एहसास को समाज की मुखधारा से जोड़ना चाहते हैं। वे इस यथार्थ को जानते हैं कि–

"प्रेम करने के अपराध में
उन्हें अच्छी तरह भुला दिया जा चुका होता है
तब कहीं से आती है उनके होने की आवाज
उनका कोई प्रिय गीत अचानक सुनाई दे जाता है।,
वे धीमी कोमल आवाज में कुछ कहती दिखती हैं।"

समाज में मनुष्य के सपने टूट रहे हैं। डरते हुए काम करना उसकी घुटन–भरी जिंदगी को दर्शाता है। मनुष्य के स्वप्नों में बदलाव को आत्म रूप से स्वीकारा गया है जो मंगलेश की अलग–अलग कविताओं में विभिन्न परिस्थितियों की ओर जाता है।

विनय विश्वास ने मंगलेश के बारे में कहा है– "कवि ने समकालीन विकास की नकारात्मकता पर भरपूर टिप्पणी की है। मनुष्यता की उस पूँजी को संभाले रखने, बचाने का संघर्ष है, जिसे विकास लूट रहा है। यह बची रही तो कविता की जगह भी बची रहेगी।"

माँ के बारे में वे अपनी 'चेहरा' कविता में बताते हैं–

"माँ मुझे पहचान नहीं पायी
जब मैं घर लौटा
सर से पैर तक धूल से सना हुआ
माँ ने धूल पोंछी
उसके नीचे कीचड़
जो सूखकर सख्त हो गया था साफ किया।"

मंगलेश के साहित्य में नारी–विषयक गहरे चिन्तन समाए हुए हैं। उन्होंने अपनी 'संरचना' कविता में नारी को 'धरित्री' तथा जीवन का मूलाधार बताया है। लेकिन इस कविता में नारी की दयनीय स्थिति स्वतः उभर कर हमारे आ जाती है, जैसे–

"मैं कहना चाहता था तुम पृथ्वी हो
तुम में शुरू होता है जीवन, तुम में खत्म।
उसने कहा मुझे मालूम है भविष्य
मैं रोज देखती हूँ अपने हाथ–पैर
जहाँ से चढ़कर आता है अंधकार।"

मानव मन को अपने वश में करने वाली बुराइयों जैसे–घृणा, झूठ, मूर्खता, धूर्तता, पाखण्ड, क्रूरता आदि मनोरोगों का वर्णन मंगलेश ने अपनी कविता 'खुशी कैसा दुर्भाग्य' के माध्यम से किया है। इन सभी बुराइयों का मानवीकरण करके कवि हमें इनसे अवगत करवाना चाहता है। क्रूरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

"क्रूरता तुम किस शान से टहलती हो अपनी खूनी
पोशाक में
मनोरोग तुम फैलते जाते हो सेहत के नाम पर
खुशी कैसा दुर्भाग्य
तुम रहती हो इन सबके साथ।"

कवि का कोमल मन, बालमन की चेष्ठाओं को भली–भांति समझता है। कवि उन गरीब असहाय बच्चों की पीड़ा को समझता है जिनका बचपन खिलौनों से वंचित है। असहाय और लाचार बच्चों की इस बुरी अवस्था को देखकर कवि के मन में उनके प्रति संवेदना के साथ–साथ शोषकों के प्रति आक्रोश भी पनपता है। वे कहते हैं–

"कोई ओर ही दुनिया है
खिलौनों की सजी हुई
किसी और ही दुनिया के बच्चे
बढ़ाते हैं उनकी ओर हाथ।"

समाज के विकास में सामाजिक विद्रुपताएँ ही बाधा नहीं पहुँचती बल्कि शिशुओं की बुरी अवस्था भी एक चुनौती बनकर सामने आती हैं। मंगलेश डबराल ने चीजों के लिए तरसते हुए बच्चों की स्थिति से हमें अवगत कराया है। वे बताते हैं कि पैदल चलकर स्कूल जाने वाले बच्चों के पास दूसरे अमीर बच्चों के समान खेलने के लिए खिलौने, पहनने के लिए जूते व अन्य दूसरी वस्तुएँ नहीं हैं। गरीब बच्चों के साफ–सुथरे कपड़े न होने के कारण, उनकी दीन–हीन दशा के कारण उन्हें किसी भी कार्य या समारोह में प्राथमिकता नहीं दी जाती। शिशुओं की इसी पीड़ा एवं भयावह स्थिति का चित्रण करते हुए मंगलेश लिखते हैं–

"पैदल बच्चों के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है
किताबों के बीच तितलियाँ नहीं
जूते भी नहीं जिन्हें वे रख सकें
झाड़ी के पीछे
कई बार उन्हें हिदायत दी गयी है
जूते पहनकर आने की
हाथ–पैर के नाखुन कलात्मक काटने की
कई बार पड़ी हैं बेंत
और कहा गया है कि हम तुम्हें नही ले जायेंगे
महापुरूषों की आगवानी में।"

मंगलेश डबराल एक समकालीन कवि है। उनकी समकालीन कविता के बारे में विजय कुमार लिखते हैं– "समकालीन कविता की अपनी कुछ रूढ़ियाँ हैं जो मंगलेश के कवि स्वभाव में भी प्रकट हुई है। सबसे बड़ी बात तो यह है

कि मंगलेश की पूरी काव्य प्रकृति संवेदनशील चित्र देने और यथार्थ में एक प्रभाव को प्रस्तुत कर देने तक सीमित है।"

कवि नंद किशोर नवल भी प्रेमनिष्ठ संवेदना के बारे में लिखते हैं– "प्रेम और सौंदर्य भावना भी आस्था का ही एक रूप है। जिस व्यक्ति में जीवन के प्रति आस्था नहीं, यानी जिसकी जिजीविषा समाप्त हो गई है, उसके लिए न प्रेम का महत्व है, न मनुष्य अथवा प्रकृति के सौंदर्य का।"

कवि मंगलेश ने अपने साहित्य में सामाजिक समस्याओं से हमें रूबरू करवाया। इन समस्याओं में से एक समस्या है– भिक्षावृति। भिक्षावृति ने समाज के विकास में बड़ी बाधा पंहुचायी है। इसका वर्णन उन्होंने अपनी एक कविता 'गाता हुआ लड़का' में किया है। जैसे–

"बारह–तेरह बरस का लड़का
भीड़ भरी बस में गाता था एक खुशी का मीठा गाना
गले में नन्हा हारमोनियम लटकाये
उसकी चारेक बरस की बहन मांगती थी पैसा
मुसाफिरों से घूम–घूमकर।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'तारे के प्रकाश की तरह', पृ॰ 69
2. राजेन्द्र यादव, 'मैत्रेयी पुष्पा', शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर 2002
3. मंगलेश डबराल, पहाड़ पर लालटेन, एक स्त्री, पृ॰ 21
4. कवि मंगलेश डबराल से ओम निश्चल की बातचीत, साक्षात्कार 2004
5. डॉ॰ विद्यावती जी राजपूत, मंगलेश डबराल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ॰ 53
6. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'स्त्रियाँ, पृ॰ 19
7. विनय विश्वास, 'आज की कविता', पृ॰ 58
8. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'चेहरा', पृ॰ 55
9. मंगलेश डबराल, 'घर का रास्ता, 'संरचना' पृ॰ 25
10. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'खुशी कैसा दुर्भाग्य', पृ॰ 88
11. मंगलेश डबराल, 'घर का रास्ता', खिलौने, पृ॰ 72
12. मंगलेश डबराल, 'घर का रास्ता पैदल बच्चे स्कूल, पृ॰ 31
13. विजय कुमार, 'साठोतरी हिन्दी कविता', पृ॰ 260
14. नंद किशोर नवल, समकालीन काव्य–यात्रा, पृ॰ 33
15. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', गाता हुआ लड़का', पृ॰ 60

RRIJM 2015, All Rights Reserved